Department of Philosophy
D. B. COLLEGE, JAYNAGAR, MADHUBANI (BIHAR)
(A Constituent unit of L. N. Mithila University K. Nagar, Darbhanga)

Paper III, (Indian Logic) BA Part II H.

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619

Lecture No. 11, Sept.
September 11, 2020

BA Part I H

【अनुमान के प्रकार 】

【Kinds Of Inference】

न्याय दार्शनिकों ने अनुमान का वर्गीकरण विभिन्न दृष्टिकोण से किया है।

A. प्रयोजन की दृष्टि से अनुमान के दो भेद किए जाते हैं:-

- **स्वार्थानुमान**
- **परार्थानुमान**

(1) स्वार्थानुमान :-

जब मनुष्य स्वयं निजी ज्ञान की प्राप्ति के लिए अनुमान करता है, तब उस अनुमान को स्वार्थानुमान कहा जाता है। स्वार्थ अनुमान में वाक्यों को क्रमबद्ध रूप से रखने की आवश्यकता नहीं होती है। पहाड़ पर धुएँ को देखकर यह अनुमान किया जाता है की वहां आग होगी। इस अनुमान का आधार हमारा पहले का अनुभव होता है। जब भी हमने धोने को देखा है, तब-तब हमने उसे अग्नियुक्त पाया है। इसलिए धुआँ और आग के बीच आवश्यक संबंध हमारे मन में स्थापित हो गया है। इसी संबंध के आधार पर धुँए को देखकर तुरंत ही आग का अनुमान हो जाता है।

(2) परार्थानुमान :-

परार्थानुमान दूसरे के निमित्त किया जाने वाला अनुमान है। अर्थात् जब हम दूसरों की शंका को दूर करने के लिए अनुमान का सहारा लेते हैं, तो उस अनुमान को परार्थानुमान कहा जाता है। परार्थानुमान के लिए पांच वाक्यों की आवश्यकता होती है। इसलिए इस अनुमान को पंचावयव अनुमान (Five membered syllogism) कहा जाता है। इस अनुमान के पाँच अंग इस प्रकार हैं:-

1. पहाड़ पर आग है। - (प्रतिज्ञा)
2. क्योंकि वहाँ धुआँ है। - (हेतु)
3. जहाँ-जहाँ धुआँ रहता है, वहाँ-वहाँ आग रहती है, जैसे-- रसोई घर में। - (उदाहरण सहित व्याप्ति वाक्य)
4. पहाड़ में धुआँ है। - (उपनय)
5. इसलिए पहाड़ पर आग है। - (निगमन)

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619
Lecture No. 11, Sept.
September 11, 2020

स्वार्थानुमान और परार्थानुमान में अंतर

1. परार्थानुमान और स्वार्थानुमान में प्रथम अंतर यह है कि स्वार्थानुमान में तीन वाक्यों की आवश्यकता होती है। परंतु परार्थानुमान में पाँच वाक्यों की आवश्यकता होती है।
2. स्वार्थानुमान पहले आता है, परार्थानुमान बाद में आता है। परार्थानुमान का आधार स्वार्थानुमान है। यह स्वार्थानुमान की विधिवत अभिव्यक्ति है।

न्याय दर्शन में परार्थानुमान अधिक प्रसिद्ध है। महर्षि गौतम के तर्कशास्त्र का यह अनमोल अंग है।

B. प्राचीन न्याय के अनुसार अनुमान के तीन प्रकार माने गए हैं। वे तीन प्रकार हैं :-

- **पूर्ववत् अनुमान**
- **शेषवत् अनुमान**
- **सामान्यतोदृष्ट अनुमान**

1. पूर्ववत् अनुमान :-

पूर्ववत् अनुमान उस अनुमान को कहा जाता है जिसमें ज्ञात कारण के आधार पर अज्ञात कार्य का अनुमान किया जाता है। आकाश में बादलों को देखकर वर्षा का अनुमान करना तथा वर्षा का ना होना देखकर भावी फसल के नष्ट होने का अनुमान करना, पूर्ववत् अनुमान के उदाहरण है।

2. शेषवत् अनुमान :-

यह वह अनुमान है जिसमें ज्ञात कार्य के आधार पर अज्ञात कारण का अनुमान किया जाता है। उदाहरण स्वरुप प्रातः काल चारों ओर पानी जमा देखकर रात में वर्षा के हो चुकने का अनुमान करना शेषवत् अनुमान है। मलेरिया बीमारी को देखकर एनोफिल मच्छर के रहने का अनुमान करना शेषवत् अनुमान है। किसी विद्यार्थी का परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास करने के कारण यदि हम यह अनुमान करें कि वह अवश्य ही परिश्रमी होगा, तो यह शेषवत् अनुमान कहा जाएगा। इस प्रकार शेषवत् अनुमान में कार्य को देखकर कारण का अनुमान किया जाता है।

3. सामान्यतोदृष्ट अनुमान :-

यह अनुमान उपरोक्त प्रकार के अनुमानों से भिन्न है। यदि दो वस्तुओं को साथ-साथ देखें तब एक को देखकर दूसरे का अनुमान करना सामान्यतोदृष्ट अनुमान कहलाता है। हम लोगों ने बगुले को उजला पाया है। ज्यों हीं हम सुनते हैं कि अमुक पक्षी

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619
Lecture No. 11, Sept.
September 11, 2020

बगुला है, त्यों हीं हम अनुमान करते हैं कि वह उजला होगा। यदि दो व्यक्ति --राम और मोहन-- को निरंतर एक साथ पाते हैं, तो राम को देखकर मोहन के बारे में अनुमान करना समान्यतोदृष्ट अनुमान है।

C. फिर नव्य न्याय दार्शनिकों ने अनुमान की तीन भेद किए हैं। यह तीन भेद हैं:-

- ✓ **केवलान्वयी अनुमान**
- ✓ **केवल-व्यतिरेकी अनुमान और**
- ✓ **अन्वय-व्यतिरेकी अनुमान**

1. केवलान्वयी अनुमान:--

जब व्याप्ति की स्थापना भावात्मक उदाहरणों से होती है, तब उस अनुमान को केवलान्वयी अनुमान कहते हैं। अन्वय का अर्थ है -- 'साहचर्य'। एक के उपस्थित रहने पर दूसरे का उपस्थित रहना अन्वय कहलाता है। जैसे :--

सभी जानने वाले पदार्थ नामधारी हैं।
घट एक जानने वाला पदार्थ है।
इसलिए घट नामधारी है।

2 केवल-व्यतिरेकी अनुमान:--

जिस अनुमान में व्याप्ति की स्थापना निषेधात्मक उदाहरण के द्वारा संभव हो उस अनुमान को केवल व्यतिरेक अनुमान कहा जाता है।

सभी आत्मा-रहित वस्तुएं चेतना-रहित हैं।
सभी जीव चेतन हैं।
इसलिए सभी जीवो में आत्मा है।

3. अन्वय-व्यतिरेकी अनुमान:--

जिस अनुमान में व्याप्ति की स्थापना अन्वय और व्यतिरेक दोनों विधियों से हो उस अनुमान को अन्वय व्यतिरेक विधि कहते हैं। उदाहरण :

1. **सभी धूमवान् वस्तु अग्नियुक्त है।**
   पहाड़ धनवान् है।
   अतः पहाड़ में अग्नि है।
2. **सभी अग्नि-रहित पदार्थ धूमहीन है।**
   पहाड़ धूमयुक्त है।
   अतः पहाड़ अग्नियुक्त है।

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619
Lecture No. 11, Sept.
September 11, 2020

इस प्रकार हम पाते हैं कि न्याय दर्शन में अनुमान के विभिन्न दृष्टियों से वर्गीकरण किया गया है।